ममता कालिया द्वारा रचित उपन्यास 'अँधेरे का ताला' में शैक्षणिक यथार्थ का चित्रण

सोमवीर

हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय,
अटेली, हरियाणा।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 5, Issue 4, (July-August 2017)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

सार

साहित्य समाज का दर्पण होता है । समाज की झलक साहित्य में दिखाई देती है । मानव जीवन की विभिन्न घटनाएं उसके सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आकर्षण-विकर्षण आदि उसके साहित्य में अभिव्यक्त होते हैं। हिन्दी गद्य विधाओं में उपन्यास ऐसी विधा है। 'अँधेरे का ताला' में ममता कालिया जी ने कॉलेज की अध्यापिकाओं छात्राओं व अन्य कर्मचारियों के जीवन की घटनाओं को चित्रित किया है । निराला जी की प्रसिद्ध पंक्तियों को अपने सामने रखते हुए ममता जी ने 'अँधेरे का ताला खोलने' बालों की असलियत को व्यंग्यात्मक शैली में हमारे सामने प्रस्तुत किया है ।

परिचय

इस शोधपत्र में 'अँधेरे का ताला' में शैक्षणिक यथार्थ का वर्णन किया है। शिक्षक को हमारे समाज में अह्म स्थान दिया गया है । कबीरदास जी ने गुरू का स्थान भगवान से भी ऊँचा बताया है । वे कहते हैं :

> ''गुरू गोबिन्द दोऊ खड़े काके लागू पॉय ।
> बलिहारी गुरू आपने जिन गोविन्द दिया मिलाये ।''

कबीरदास जी गुरू को भगवान से भी महान मानते हैं क्योंकि वे ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग बताते हैं । परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर गिरावट आती जा रही है । शिक्षक जो हमारे अज्ञानता रूपी अँधेरे का ताला शिक्षा के माध्यम से खोलते हैं, वे स्वयं भ्रष्ट हो चुके हैं । शिक्षा का क्षेत्र पूरी तरह से उथल-पुथल हो गया है । इसी का चित्रण ममता जी ने अपने उपन्यास के माध्यम से किया है । शैक्षणिक यथार्थ के अन्तर्गत शिक्षकों की कामचोरी, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की कामचोरी, प्रबन्धन की कमी, कॉलेज में प्रवेश की समस्या, शिक्षकों की कमी, शिक्षकों के शोषण का यथार्थ चित्रण, संसाधनों की कमी, शिक्षा का व्यवसायीकरण, छात्रों में बढ़ रही अपराधीकरण की प्रवृति, छात्रों में हो रहे नैतिक पतन, परीक्षाकाल की समस्याएँ,

परीक्षा के समय नकल की समस्यॉ, परीक्षकों द्वारा छात्राओं का शोषण, शिक्षकों द्वारा छात्रों का शोषण, महाविद्यालय में होने वाले कार्यक्रम आदि का चित्रण किया है ।

शिक्षकों की कामचोरी

ममता जी ने शिक्षकों में लगातार बढ़ रही कामचोरी का यथार्थ चित्रण किया है । उपन्यास के आरम्भ में जब सक्सेना बहन जी हाजिरी ले रही होती हैं तो कुछ छात्राएँ उन्हें घेरकर अपनी हाजिरी यह कहकर 'प्रेजेंट' लगवाती हैं, कि वे कल कक्षा में उपस्थित थी । इस प्रकार सक्सेना बहन जी का ज्यादा समय हाजिरी लेने में ही बीत जाता है । वे गुस्से में कहती हैं ''भई, इस तरह रोलकॉल को लेकर रोज समय नष्ट न किया करो। मैं अटैन्डेंस लेना बिल्कुल बंद कर दूंगी ।''

परन्तु फिर भी छात्राएं अपनी हाजिरी को लेकर बहस करती हैं । मैडम बाद में बैठने को कहती हैं । वे स्वर चढ़ा कर कहती हैं, ''लड़कियों, जनवरी आ गयी है । अभी आधा कोर्स भी नही हुआ है ।''

कोर्स पूरा भी कैसे हो सकता है क्योंकि शिक्षकों में पढ़ाने की रूचि ही नहीं रही है । बड़ी बहन जी के ना आने पर सभी अध्यापिकाओं के चेहरे खुशी से खिल जाते हैं । संस्कृत का तीसरा पीरियड़ होने पर भी संस्कृत की अध्यापिका घूप में बैठकर स्वेटर बुन रही होती है । वह अपने मन में कल्पना करती है कि यदि बड़ी बहन जी तीन दिन न आये तो वे अपनी स्वेटर पूरी कर सकती हैं । घर में उन्हें बच्चों व पति के काम से समय नहीं मिल पाता। वे सोचती हैं कि लड़कियाँ तो गाइड व गैसे पेपर के सहारे ही पास होती हैं। उनका पढ़ाने का मन बिल्कुल नहीं करता है। बड़ी बहन जी के न आने पर सभी अध्यापिकाओं का चाय का समय समाप्त होने का नाम ही नही लेता है। चाय का समय बारह से सवा बारह बजे का होता है । शकुन चतुर्थ श्रेणी की कर्मचारी है उसका काम चाय पिलाने को है । शकुना जब चाय अध्यापिकाओं को पिलाती है तो बीच में घण्टा बज जाने पर सभी अध्यापिकाएं गुस्से में कहती हैं ''अभी चाय की घूंट भी नहीं भरी कि घण्टा बोल गया । अभी तो गला तर भी नहीं हुआ।'' इस प्रकार चाय का समय बढ़कर बारह चालीस हो जाता है । बाद में बड़ी बहन जी जब गश्त पर निकलती हैं तो देखती हैं कि, जिस कक्षा में से शोर आ रहा है वहां मैडम नहीं है । वे बच्चों से पूछती हैं तो पता चलता है कि मैडम तो चाय पीने में व्यस्त है । वह बच्चों से पूछती है ''किसका पीरियड है यह?'' जानते हुए भी पूछती है । लड़कियां हंस देती हैं, ''जी यह ही टाइम पीरियड है।''

इस प्रकार शिक्षकों को अपने कार्य से लगाव कम हो रहा है । वे अपने अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से नहीं कर रहे ।

चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की कामचोरी

चतुर्थ श्रेणी की कर्मचारी भी कामचोरी का शिकार होते जा रहे हैं। एक बाद जब बड़ी बहन जी बिरजू को कहती है ''बिरजू, यह चिट्ठी ले कर निदेशालय जाना है ।'' बिरजू कहता है ''हमारी साइकिल खराब है । आप कहें तो रिक्शे से चले जाएं?'' बाद में बड़ी बहन जी लल्लन से यह काम करने को कहा तो उसने अपना बायाँ पंजा आगे करते हुए कहा ''देख रही है गुरूजी, पैर में फोड़ा निकला है, बड़ा पिरात है । हमार जाना मुश्किल है ।'' बड़ी बहन जी चिल्लाती है पर कुछ नहीं कर पाती है । ये सब इन लोगों के काम न करने के बहाने होते हैं । लकमी दाई जी बड़ी जी के दफतर के बाहर द्वारा पर लगे स्टूल पर न बैठकर, दरवाजे से हटकर बोरा बिछाकर बैठती है । उसे ऊँचा सुनता है । घण्टी की टन-टन भी उसकी नींद नहीं तोड़ पाती है । इस कारण उसकी

इस लापरवाही की वजह से एक लड़का बड़ी बहन जी को उन्हीं के कक्ष में पेपर वेट से घायल कर भाग जाता है। इस प्रकार कोई भी कर्मचारी अपने कार्य में ध्यान नहीं लगाता है ।

प्रबन्धन की कमी

कॉलेज में उचित प्रबन्धन का अभाव था । इसका भी यथार्थ चित्रण देश किया गया है । कमरे बड़े थे पर उनमें रोशनी करने वाले बल्ब फयूज्ड रहते । कक्ष में रखे डस्टर भी समय पर उपलब्ध नहीं होते थे । कॉलेज में कोई बाथरूम की भी व्यवस्था नहीं थी । मुख्य इमारत के बाहर झाड़-झंखाड़ में एक साथी बनी हुई कोठरी थी । इसी कोठरी के दो भाग किये हुए थे । एक हिस्सा छात्राओं के लिए व दूसरा शिक्षकाओं के लिए। दोनों ही तरफ कमोड की व्यवस्था नहीं थी। छात्राओं वाली तरफ तीन नालियाँ थी व अध्यापिकाओं वाली तरफ एक टॉयलेट में एक गन्दी प्लास्टिक की बाल्टी व एक टूटा मग था । नल टूटा हुआ था जिस कारण लघुशंका के लिए बैठने पर पानी गिरना शुरू हो जाता और शिक्षिका के कपड़े भीग जाते ।

जब प्रबन्धक जी को इस समस्या से अवगत करवाया गया तो उन्हें लगा जान बूझकर और झमेले में फंसाया जा रहा है । वे कहने लगे ''बार-बार बाथरूम जाने की जरूरत क्या है ? कह तो सब घर से करके आया करें ।''

नन्दिता जी ने उन्हें समझाते हुए कहा ''ऐसा है बाबू जी, महिलाओं की दस तरह की परेशानियाँ होती हैं । बाथरूम तो होना ही चाहिए ।''

इस पर प्रबन्धक जी बोले ''अब सबके गुप्त रोगों की देखभाल का जिम्मा हमारा नहीं है । तुम खुद सोचो, अगर सब मन लगाकर पढ़ाएं तो बाथरूम की उन्हें याद भी न आये । चालीस बरस हो गये हमें कचहरी जाते। हमने कभी देखा नहीं वहां बाथरूम कैसा है ।''

बाथरूम की समस्या ज्यों की त्यों बनी रही ।

बारिश के महीनों में बाथरूम तक छाता लेकर जाना पड़ता । बाथरूम तक जाने के लिए चौथी संकरी सीढ़ी चढ़कर छाते के नीचे से ही छाते का हैण्डल, पर्स व साड़ी संभालते हुए ताला खोलना पड़ता था। बरसात के मौसम में बाथरूम के रास्ते में ऊँची घास उग जाती । जमीन पर फिसलने का खतरा बढ़ जाता । सांप-बिच्छू के काटे जाने की सम्भावना बढ़ जाती ।

कॉलेज जिस स्थान पर बना था । वहां पहले तालाब होता था । कॉलेज की जगर दान में मिली थी । यहाँ कई वर्षों से नगरपालिका कूड़ा-करकट डालती रही तब यह जगह सममतल हुई । कॉलेज का मैदान मुख्य सड़क से नीचा होने को वर्षा अधिक होने पर पानी मैदान में भर जाता। कॉलेज के मैदान में छह फुट पानी खड़ा हो जाता । तीसरे दिन से उसमें बदबू आनी शुरू हो जाती । भीषण गर्मी, गन्दगी, गन्ध में बैठकर कार्य करना नन्दिता के लिए मुश्किल हो जाता ।

कॉलेज में पीने के पानी की भी समस्या थी । पीने के पानी के लिए कोई अलग टंकी का प्रबन्ध नहीं किया गया था । तीन जन लगवाये गये थे जिनमें से एक हमेशा बन्द रहता था । दो नल हजरा छात्राओं के लिए पूरे नहीं थे । इस कारण पानी पीने आने

वाली छात्राओं का नल पर जगघट लगा दिखाई देता था । बार-बार प्रबन्धक जी से इसके बारे में बात की जाती परन्तु परिणाम कुछ भी नहीं निकलता था । इस समस्या से परेशान आकर अध्यापिकाएं अपने साथ पानी की बोतल लाने लगी । शालिनी तिवारी ''अगर पोर्टेबल यूरिनल मिलता हो तो वह भी वॉटर बॉटल और पर्स के साथ लटका कर लाना चाहिए ।''

कॉलेज में प्रवेश की समस्याँ

कॉलेज में प्रवेश प्राप्त करने के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है । इस प्रवेश परीक्षा में भी कई प्रकार की त्रुटियां होती हैं । कोई छात्रा इसमें रह जाती है तो उसके अभिभावक कॉलेज के सामने धरना देते हैं। अभिभावक कहते हैं इन्टर में उनकी लड़की के अस्सी प्रतिशत अंक आये हैं । वे उसका यहीं दाखिला करवायेंगें । नन्दिता उन्हें समझाते हुए कहती - ''गनपत कॉलेज चले जाइए, वहां बिना प्रवेश परीक्षा के दाखिला हो रहा है।''

अभिभावक कहते ''कमाल करती हैं आप । आपका कॉलेज हमारे घर के बगलई में है, हम दस मील दूर लड़की को क्यो भेजेंगे?''

इस प्रकार के अभिभावक कॉलेज के नियमों को ताक पर रख देते हैं ।

शिक्षकों की कमी

आजकल शिक्षकों की कमी अधिकतर कॉलेजों में देखने को मिलती है। परन्तु प्रबन्धक समिति इस तरफ ध्यान नहीं देती है । कॉलेज के प्रबन्धक अग्रवाल जी कहते हैं ''कहो, इतनी टीचरों का क्या करोगी? आचार डालोगी? प्राइमरी अस्सी रूपये पर एक टीचर आठ घण्टी पढ़ाती है । तुम्हारे यहां चार सौ में दो घण्टी पढ़ाएगी, बाकी छः घण्टी डण्डे बजाएगी और तुम एम.ए., पी.एच.डी. पास क्या करोगी? प्रिंसिपली का मतलब यह नहीं है कि बैठी बैठी राम राम करो । पढ़ाना तुमको भी पड़ेगा ।''

कॉलेज में सात प्राधयापिकाओं की कमी है । मांग रखने पर प्रबन्धक जी साफ मना कर देते हैं । वह इस अतिरिक्त कार्यभर का जिम्मा नन्दिता पर डाल देते हैं । नन्दिता जी अंग्रेजी पढ़ाती हैं परन्तु अंग्रेजी में केवल तीन छात्राएं हैं । अन्य विषयों को वह नहीं पढ़ा सकती। इसके लिए वह अग्रवाल जी को मना कर देती हैं । अग्रवाल जी को मना कर देती है । अग्रवाल जी उन्हें ऐसी लड़कियों को ढूंढ कर लाने को कहते हैं जो कॉलेज में निःशुल्क या कम पैसे में पढ़ा सकें । इस प्रकार कॉलेज में टीचर की कमी होने पर भी उनकी नियुक्ति की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता है । टीचरों के अभाव में पढ़ाई की हानि होगी इस बात से प्रबन्धक समिति को कोई फर्क नहीं पड़ता । वह तो सिर्फ व्यय की तरफ ध्यान देती है । इस प्रकार की व्यवस्था अब हर कॉलेजों में दिखाई पड़ती है । छात्राओं का भविष्य अन्धकारमय हो गया है ।

शिक्षकों के शोषण का यथार्थ चित्रण

कॉलेज में सात टीचरों की कमी की पूर्ति हेतु अग्रवाल जी अपनी बुद्धि के बल पर सात ऐसी टीचरों की नियुक्ति करता है जो प्राइमरी स्कूल के साथ डिग्री क्लास को भी पढ़ा सकती थी । बेरोजगारी से परेशान ये अभ्यार्थीनी खुश होती हैं कि उन्हें प्राइमरी के साथ डिग्री क्लास भी पढ़ाने को मिलेंगी । अग्रवाल जी उन्हें आशवासन देते हैं कि यदि तुम्हारा परीक्षाफल बेहतर होगा तो तुम्हें डिग्री काफलेज में नियुक्त कर दिया जायेगा । इस प्रकार से बेरोजगार लड़कियों से छलावा किया जाता है । वे बेचारी जी तोड़

मेहनत से पढ़ाती हैं । नतीजे में रानी लक्ष्मीबाई कॉलेज की छब्बीस छात्राएं अच्छे अंकों से पास हो जाती हैं । इस कारण अगले छात्र संख्या एक सौबीस पहुंच जाती है । नयी अध्यापिकाएं संयुक्त रूप से अग्रवाल जी को पत्र लिखती हैं कि उनकी मेहनत से परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहा । इस कारण वे उनका तबादला डिग्री कॉलेज में कर दिया जाये । इस पत्र को वे सब स्वयं अग्रवाल को देने जाती हैं। अग्रवाल जी उनके आने का कारण पूछते हैं । उनमें से कीर्ति कहती है ''हमारे मेहनत से डिग्री कॉलेज में इस साल परिणाम शत-प्रतिशत रहा है।''

''यह तुम कैसे कह सकती हो । लड़कियाँ तो गाइड पढ़कर पास होती हैं । यश टीचर लूटते हैं ।''
''जी नहीं बाबू जी, हमारा पढ़ाया एक-एक शब्द लड़कियों के काम आया।''
''हां तो अब तुम्हें क्या कहना है?''
''आपने कहा था रिजल्ट अच्छा रहा तो हम सबकी सेवायें आप डिग्री सैक्शन में करवा देगें ।''
''ठीक है, हम विचार करेंगे । प्राचार्य से भी बात कर लें । तुम्हारे काम से वे संतुष्ट है या नहीं, पता लगा लें ।''

अध्यापिकाएं खुश होकर घर चली जाती हैं । परन्तु यह प्रबन्धक की एक चाल होती है । वह अगले ही हफते उन सभी अध्यापिकाओं की छुट्टी कर देता है । उनके स्थान पर नयी लड़कियों को नियुक्त कर देता है । इस प्रकार हर साल यह सिलसिला चलता रहा है । इस प्रकार बेरोजगारी का फायदा उठाकर उनका शोषण किया जाता है।

संसाधनों की कमी

कॉलेज में वितीय व्यवस्था ठीक न होने के कारण संसाधनों की कमी है। कॉलेज में पंखों की, बल्बों की संगीत विभाग में तबलों की आवश्यकता है, इसके साथ ही कॉलेज में मटकों की कमी है । कॉलेज के पुस्तकालय में पुस्तकों की भी कमी है । परन्तु प्रबन्धक समिति का इस तरफ कोई ध्यान नहीं है । उसे व्यय की चिंता है । वह सिर्फ अपने लाभ की चिन्ता करते हैं। वह सिर्फ अपने लाभ की चिन्ता करते हैं । इसके कारण चाहे कॉलेज की दशा शोचनीय हो जाये । वे मानते हैं कि यदि एक विभाग की आवश्यकताओं को पूरा कर दिया जाऐगा तो अन्य विभाग भी अपनी मांग रख देंगें । इस प्रकार कॉलेज में अशान्ति फल जायेगी । आजकल प्रबन्धक समिति केवल लाभ कमाने पर ध्यान देती है ।

शिक्षा का व्यवसायीकरण

शिक्षा के व्यवसायीकरण को भी चित्रित किया गया है। सोने-चांदी, मेवे-मखाने कपड़े आदि के व्यापार के समान शिक्षा का भी व्यापार होने लगा है । आजकल स्कूल, कॉलेज से जयादा संख्या कोंचिग कक्षाओं की है । जो छात्र स्कूल, कॉलेज समय पर नहीं पहुंचता है, वही छात्र कोचिंग की क्लास में सुबह 5:20 पर पहुंच जाता है । कई कोंचंग कक्षाओं में अनुशासन की भावना साफ नजर आती है। यहां पर विश्वविद्यालय के नामी गिरामी प्राध्यापक पढ़ोने आते हैं । इन्हें कॉलेज से तो आय प्राप्त होती है साथी ही ये कोचिंग से भी लाभ कमा लेते हैं । ये कॉलेज में पढ़ाते समय इतनी तत्परता नहीं दिखाते जितनी कोचिंग क्लास लेते समय दिखाते हैं । ये सोचते हैं नौकरी कही भागी तो नहीं जा रही है । इनकी सोच यह भी होती है कि यदि कॉलेज में ही सबकुछ सीखा दिया जायेगा तो छात्र कोचिंग क्लास में क्यों आयेंगें । इनकी पैसा कमाने की इतनी तीव्र कामना होती है कि यह छात्र को बिना फीस के एक दिन भी नहीं पढ़ा सकते हैं । इन कोचिंग केन्द्र चलाने वालों की उस इलाकें के थाने पुलिस-चौकी और नेता से अच्छी जान पहचान होती है । इन कोचिंग केन्द्रों पर फीस ऊँची होती है। इन सब के बावजूद कोचिंग केन्द्रों पर प्रवेश लेने वालों

की भीड़ लगी रहती है । गुरूकुल कोचिंग क्लासेज में केन्द्र व राज्य प्रशासनिक सेवा परीक्षाओं की कक्षाएं चलती है । प्रतिवर्ष इस केन्द्र के दस छात्रों का पेपर पास हो जाता था । वहां सिर्फ पैंतीस छात्रों के लिए ही स्थान था । परन्तु लोगों का मानना था कि कोचिंग में जो प्रश्न-पत्र करवाये जाते हैं वह परीक्षा में पूछे गये प्रश्न-पत्रों से काफी मेल खाते हैं । इसी कारण मंचक कौशिक जिसके पिता अ.मु.वि.वि. में प्रेफेसर के संरक्षण में न रहकर कोचिंग केन्द्र में प्रवेश करना अच्छा समझा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] तीर्थेश्वर सिंह, समकालीन हिन्दी कविता की यथार्थवादी चेतना, प्रथम संस्करण, 2006, मानसी पब्लिकेशन, दरियागंज, दिल्ली ।

[2] नारायण सिंह, बीसवीं शताब्दी, हिन्दी उपन्यास : नए दो पहलू, प्रथम संस्करण, 1976, लोकवाणी प्रकाशन, कृष्ण नगर, दिल्ली ।

[3] ममता कालिया, ममता कालिया की कहानियाँ, 2008, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली ।

[4] राजकुमार सैनी, यथार्थवाद और सौन्दर्य शास्त्र, प्रकाशक: टाइम बुक्स, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली, मुद्रक: कम्पीटेंट प्रिंटर्स, दिल्ली ।

[5] शशिबाला शर्मा, मुक्तिबोध की कविता में यथार्थबोध, प्रथम संस्करण, प्रकाशक: प्रवीण शर्मा, अशोक विहार, दिल्ली ।

[6] सुमित्रा त्यागी, हिन्दी उपन्यास: आधुनिक विचारधाराएं, प्रथम संस्करण, 1978, साहित्य प्रकाशन, मालीवाड़ा, दिल्ली ।